कश्मीर दर्दनाक घटनाएं 1989-90

अनदेखी पर सुनी-अनसुनी पर देखी घटनाएँ

कश्मीरी मुसलमानों ने कश्मीर में दंगे - फ़साद शुरू कर दिए थे कि यह ज़मीन हमारी है। कश्मीरी पंडितों को कहने लगे थे आप लोग हमारे साथ मिल जाओ या मर जाओ या यहाँ से भाग जाओ। कश्मीरी मुसलमान कश्मीरी पंडितों के घर जा कर उनको मारने काटने लगे थे। कई लोगों के कान काटे, कई लोगों की आंखें निकाली, कई लोगों को पेड़ों पर उल्टा लटका कर मार दिया।जब कश्मीरी पंडित रात को अपने घरों में सोने लगते थे तो उनके मन में यह ख्याल आता था पता नहीं हम कल का सूरज देख पाएँगे या नहीं। जब सुबह उठते थे तो उनको लगता था आज तो हम जिंदा हैं कल का पता नहीं।वो कहते थे आदमी लोग यहां से जाओ और औरतों को यहां छोड़ दो हम इनसे निकाह करके इन्हें मुस्लमान बनाएंगे। उस समय कश्मीर में शौचालय खुला होता था। कुछ मुस्लमान दोस्तों ने अपने हिन्दू दोस्तों को पकड़ कर उनका मुँह शौच में डाल दिया था कुछ लोग बाजार से घर के लिए जरूरी सामान लेने जाते तो उन्हें लाठियों से मारा और बंदूक दिखा कर डराया जाता था। कुछ कश्मीरी पंडितों को कारोग्रेट पर रखा जाता था आज इसकी हत्या करेंगे कल दूसरे की। ऐसे हालात देख कर कश्मीरी पंडितों को अपनी इज्जत और जान बचा कर घर छोड़ कर भागना पड़ा । वो भी खाली हाथ। बिना सामान के।कुछ समय के बाद जब कश्मीरी पंडित अपना सामान लेने कश्मीर गए तो डर के मारे कुछ न ला सके वहां सारा सुन्सान हो चुक था। और उनके घरों पर मुसलमानों ने अपना कब्जा कर लिया था।कश्मीर में जहाँ कश्मीरी पंडितों का चार पांच मंजिला मकान हुआ करता था जिसमें 15-20 कमरे होते थे वो सब छोड़ कर उनको दूसरे शहर में जा कर एक टूटे कमरे में गुजर-बसर करनी पड़ी थी।पैसे की कमी के कारण कई सालों तक कश्मीरी पंडितों को एक कमरे के फ्लैट में रहना पड़ा जोइंट फेमिली के साथ। कुछ बालकनी में एडजस्ट होते कुछ अन्दर।पैसे न होने के कारण कुछ लोग टैंटों में रहने लगे थे जहाँ खाना पीना बड़ा ही मुश्किल से मिलता था जब रात को पानी लेनेके लिए बाहर जाते थे। अँधेरे में कुछ नज़र नहीं आता था तो कई लोगों को साँपों ने काट लिया था।घर छोड़ने के ग़म में कुछ लोग बीमार हो गए। उस ग़म की बीमारी का कोई इलाज नहीं हो पाया और वो बीमारी से मर गए और अपने बच्चों को अनाथ छोड़ गए।एक किस्सा एक 22-23 साल का लड़का जब अपने घर कश्मीर गया अपना सामान लाने तो उसको अचम्बा दिखा। ऊपर चौथी मंजिल पर तार पर कुछ कपड़े बिछे हुए हैं। लाईट भी जल रही है और कुछ आवाजें भी आ रहीं हैं। गद्दार मुस्लिमों ने वहां अपना कब्जा कर लिया था। वो लड़का ये सब देख कर घबरा गया पर उसने अपनी हिम्मत जुटाई अपने ग्राउंड फ्लोर में चुपके से गया। वहां अपना सारा सामान देखकर आंखें नम हो गईं। बस उसने चुपके से सिर्फ एक गैस स्टोव उठाया और दौड़ कर भाग निकला ताकि उसे कोई देख न ले।आज भी जब कश्मीरी पंडित औरतें कश्मीर में नौकरी करने जाती हैं तो अपने माथे पर टीका लगाने से डरती हैं ताकि उनकी जान बच जाये।कोई उनको हिन्दू समझ कर मार न दे।आज भी जब कश्मीरी पंडित कश्मीर जाते हैं तो उनको वहां पर बहुत ताने सुनने को मलते हैं ये वहीकश्मीरी पंडित हैं जो यहाँ से भाग गए।जो हमारी ज़मीन पर रहते थे और हमारी ज़मीन खा ली। इस तरह के ताने सुनते कश्मीरी पंडितों के अन्दर से ऐसी आवाज सी महसूस होती आज तो हमारी जान गई ये हमें गोली मार देंगें।सरकार से अब प्रार्थना है कि हमें हमारे कश्मीर के मकान, ज़मीन का पैसा दिलाएं। जो जला कर राख कर दिया। जो 60 लाख का मकान था उसका केवल हमें 10 लाख ही मिल पाया। क्या करें पैसों की किल्लत थी थोड़े में ही गुज़ारा करना पड़ा। सरकार हमारी गुज़ारिश सुने और हमें हमारे मकान, ज़मीन का पैसा दिला दे। बहुत बरस बीत गए अब तो हमारा हक दिलाएं।अब कश्मीर की सरकार को कश्मीर में अमन और शांति बनाए रखनी चाहिए ताकि दूसरे शहर के लोग वहां जा कर कश्मीर की सुन्दरता को निहार सकें। खीर भिवानी वाली माता हालात देख कर इतना घबराई खुद से इतना शरमाईपर उसने अपनी हिम्मत जुटाई कश्मीरी पंडितों की ज़न्दगी बचाई सिथर जगह पहुंचाई

अन्नपूर्णा कौल, नोएडा

अवंतिका नगरी उज्जयिनी के सम्राट

विक्रमादित्यउज्जैन जिला ब्यूरो प्रमुख। जवाहर डोसी पीयूष विक्रमादित्य का नाम उनके जन्म से पहले ही भगवान शिव ने रख दिया था। विक्रमादित्य परमार वंश के 8वें राजा थे। विक्रमादित्य ने मात्र 20 वर्ष की उम्र में ही शकों को पूरे एशिया से खदेड़ दिया था। विक्रमादित्य भारत और एशिया को स्वतंत्र करवाने के बाद वे खुद राजगद्दी पर नहीं बैठे बल्कि अपने बड़े भाई भर्तृहरी को राजा बनाया पर पत्नी से मिले धोखे ने भर्तृहरी को सन्यासी बना दिया और उसके बाद जब भर्तृहरी के पुत्रों ने भी राजसिंहासन पर बैठने से मना कर दिया तब विक्रमादित्य को ही राजसिंहासन पर बैठना पड़ा। विक्रमादित्य का राज्याभिषेक दीपावली के दिन हुआ था। विक्रमादित्य ने शकों पर विजय हासिल कर विश्व के प्रथम कैलेंडर विक्रम संवत की स्थापना की थी। विक्रमादित्य ने अश्वमेध यज्ञ किया था और चक्रवर्ती सम्राट बने थे। विक्रमादित्य के शासन में वर्तमान भारत,चीन, पाकिस्तान,बांग्लादेश, जापान, अफगानिस्तान, म्यांमार,श्री लंका,इराक,ईरान,कुवैत,टर्की,मिस्र, अरब,नेपाल,दक्षिणी कोरिया,उत्तरी कोरिया, इंडोनेशिया,अफ्रीका और रोम शामिल थे।इसके अलावा अन्य देश सधिकृत थे। विक्रमादित्य पहले राजा थे जिन्होंने अरब पर विजय हासिल की थी। विक्रमादित्य का युग स्वर्ण युग कहलाया। विक्रमादित्य के समय इस पूरी पृथ्वी पर एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं था जिसके ऊपर एक रुपये का भी कर्जा हो और आज! विक्रमादित्य एकलौते ऐसे राजा थे जिन्होंने अपनी प्रजा का कर्ज खुद उतारा था। विक्रमादित्य जैसा न्याय कोई दूसरा नहीं कर पाता था।उनके दरबार से कोई निराश होकर नहीं जाता था। सम्राट विक्रमादित्य ईसा मसीह केसमकालीन थे। विक्रमादित्य ने ईसा मसीह के जन्म के समय अपने दरबार से दो ज्योतिषी ईसा मसीह का भाग्य जानने के लिये भेजे थे। विक्रमादित्य ने रोम के राजा जुलियस सीजर को युद्ध में हराकर बंदी बनाकर उज्जैन की गलियों में घुमाया था। विक्रमादित्य के न्याय से प्रभावित होकर देवराज इन्द्र ने उन्हें 32 पुतलियों वाला सिंहासन भेंट में दिया था जो ग्यारह सौ वर्ष बाद इन्हीं के वंशज राजा भोज को मिला था। विक्रमादित्य के आगे सिकंदर तो बौना ही था। विक्रमादित्य ने उज्जैन में महाकाल,अयोध्या में राम जन्म भूमि और मथुरा में कृष्ण जन्म भूमि का निर्माण कराया था। विक्रमादित्य तब तक भोजन नहीं करते थे जब तक उनकी प्रजा भोजन न कर ले। विक्रमादित्य ने ही नवरत्नों की शुरुआत की थी।कालीदास और वराह मिहिर विक्रमादित्य के ही दरबारी थे। उस युग में भगवान राम और भगवान कृष्ण के बाद अगर किसी का नाम आता था तो वो चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य का था।(विश्व के सबसे प्राचीन कलेंडर-विक्रम संवत-की शुरुआत करने वाले)यहां यह बताना/लिखना समीचीन होगा कि मेरे द्वारा नईदुनिया,इंदौर को प्रकाशनार्थ प्रेषित एक संपादक के नाम पत्र, पुरस्कृत पत्र के रूप में-जो जीता वह सिकंदर क्यों? चंद्रगुप्त,विक्रमादित्य क्यों नहीं!- शीर्षक से 19 मई 2022 को प्रकाशित हुआ था

विश्व रंगमंच दिवस;नाट्य कला का वैश्विक उत्सव

रंगमंच केवल अभिनय का माध्यम नहीं, बल्कि यह समाज का दर्पण है, जो यथार्थ को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है। इसकी शक्ति इतनी प्रभावी होती है कि यह सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को प्रभावित कर सकती है। विश्व रंगमंच दिवस इसी कला के प्रति वैश्विक श्रद्धा प्रकट करने का अवसर है, जो हर वर्ष 27 मार्च को मनाया जाता है। यह दिन रंगमंच की महत्ता, उसकी समकालीन स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की संभावनाओं पर विचार करने का अवसर देता है।रंगमंच का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और यह मानव सभ्यता की सांस्कृतिक यात्रा के साथ विकसित हुआ है। ग्रीस में 5 वीं शताब्दी ईसा पूर्व में %% को पहला अभिनेता माना जाता है, जिसने संवादात्मक अभिनय की नींव रखी। वहीं भारत में नाट्यशास्त्र के रचयिता भरतमुनि ने रंगमंच को एक दिव्य कला के रूप में स्थापित किया। संस्कृत नाटकों में कालिदास, भास और शूद्रक ने समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया।यूरोप में मध्यकाल में धार्मिक नाटक प्रचलित हुए, तो पुनर्जागरण के दौरान विलियम शेक्सपियर जैसे महान नाटककारों ने रंगमंच को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। भारत में पारसी थिएटर, बंगाल का जत्रा, महाराष्ट्र का तमाशा, और लोक नाट्य शैलियों ने रंगमंच को विविधता प्रदान की। आधुनिक भारतीय रंगमंच को बलराज साहनी, हबीब तनवीर, विजय तेंदुलकर, बादल सरकार, गिरीश कर्नाड, और अन्य महान नाटककारों ने समृद्ध किया।विश्व रंगमंच दिवस की स्थापना 1961 में इंटरनेशनल थिएटर इंस्टीट्यूट द्वारा की गई थी। इस दिन का मुख्य उद्देश्य रंगमंच को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देना और नाट्यकला को सशक्त बनाना था। हर साल, एक प्रतिष्ठित रंगकर्मी इस अवसर पर 'विश्व रंगमंच संदेश' देता है, जिसे रंगमंच समुदाय में व्यापक रूप से पढ़ा और प्रचारित किया जाता है। यह संदेश रंगमंच की शक्ति, उसकी सामाजिक जिम्मेदारी और समकालीन समस्याओं के समाधान में इसकी भूमिका को रेखांकित करता है।इसमें कोई दो राय नहीं कि बीसवीं सदी में सिनेमा के उदय के बाद भी रंगमंच ने

अपनी गरिमा बनाए रखी। कई प्रसिद्ध अभिनेता जैसे नसीरुद्दीन शाह, ओम पुरी, इरफ़ान खान, शबाना आज़मी, और मनोज बाजपेयी ने अपने अभिनय की नींव रंगमंच पर ही रखी। हालांकि, रंगमंच की पहुंच सीमित होने के कारण, सिनेमा और डिजिटल माध्यमों ने इसे चुनौती दी।हाल के वर्षों में ओटीटी प्लेटफॉर्म्स जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम और जियो हॉटस्टार ने दर्शकों के मनोरंजन के तरीकों को बदल दिया है। कोविड-19 महामारी के दौरान जब थिएटर बंद थे, तो डिजिटल मंचों ने रंगमंच की जगह लेनी शुरू कर दी। हालाँकि, रंगमंच की जीवंतता और मंच पर कलाकारों के सीधा संवाद की कोई तुलना नहीं।कुछ निर्देशकों और नाटककारों ने डिजिटल माध्यमों को अपनाया और लाइव स्ट्रीमिंग के जरिए नाटकों का प्रदर्शन किया। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या यह डिजिटल नाट्यकला पारंपरिक रंगमंच की जगह ले सकती है?

यह कहना कठिन है, क्योंकि थिएटर की आत्मा उसकी लाइव प्रस्तुति में है, जिसे कोई भी डिजिटल अनुभव पूरी तरह नहीं दोहरा सकता।भारत में रंगमंच की स्थिति जटिल है। मुंबई और दिल्ली जैसे महानगरों में नाट्य प्रस्तुतियों को पर्याप्त दर्शक मिलते हैं, लेकिन छोटे शहरों में यह संघर्षरत है। नाट्य संस्थानों की कमी, उचित वित्तीय सहायता का अभाव और टिकट की बिक्री पर निर्भरता जैसे कारक भारतीय रंगमंच को सीमित कर रहे हैं।दरअसल रंगमंच को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है मसलन आर्थिक अस्थिरता ऱंगमंच व्यवसायिक रूप से लाभदायक नहीं, जिससे युवा कलाकार सिनेमा या ओटीटी की ओर आकर्षित होते हैं।सरकारी सहायता की कमी = रंगमंच को सिनेमा और अन्य कलाओं के मुकाबले कम सरकारी अनुदान मिलता है।दर्शकों की घटती रुचि = डिजिटल मनोरंजन के विकल्प बढ़ने से पारंपरिक रंगमंच का दर्शक आधार कम हो रहा है।स्थान की उपलब्धता ऱंगमंच के लिए उपयुक्त स्थानों की संख्या सीमित है और किराए अधिक हैं और टिकटों की बिक्री से उतनी आय नहीं होती है।नए लेखकों की कमी= समकालीन विषयों पर नाटक लिखने वाले नए नाटककारों की संख्या भी सीमित है। रंगमंच की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इसके भविष्य पर हमेशा ही सवाल उठाया जाता है।

मेरा ऐसा मानना है कि रंगमंच का भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि इसे किस प्रकार आधुनिक समय के अनुकूल बनाया जाता है। कुछ संभावनाएं इस प्रकार हो सकती हैं ,हाइब्रिड रंगमंच ऱलाइव नाटकों की रिकॉर्डिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर उनकी स्ट्रीमिंग से रंगमंच का दायरा बढ़ सकता है।विषयगत प्रयोगऱ सामाजिक, राजनीतिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर आधारित नाटकों को अधिक प्राथमिकता दी जा सकती है।अगर स्कूल और कॉलेज स्तर पर नाट्यकला को अनिवार्य किया जाए तो नई पीढ़ी को इससे जोड़ सकता है।इसके अतिरिक्त विदेशी नाट्य समूहों के साथ सहयोग करके भी भारतीय रंगमंच को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

यदि रंगमंच को अनुदान और कॉरपोरेट प्रायोजन दिया जाए तो इसकी आर्थिक स्थिति मजबूत हो सकती है।विश्व रंगमंच दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि यह अवसर है

रंगमंच के महत्व को समझने और इसे आगे बढ़ाने के लिए नए प्रयास करने का। नाट्यकला एक जीवंत माध्यम है, जो समाज के हर पहलू को छूती है और लोगों को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करती है। बदलते समय में रंगमंच को नवीन प्रयोगों, तकनीकी नवाचारों और समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखते हुए आगे बढ़ना होगा।अगर सही दिशा में प्रयास किए जाएँ, तो रंगमंच की प्रासंगिकता कभी खत्म नहीं होगी, बल्कि यह सिनेमा और डिजिटल माध्यमों के साथ एक संतुलित स्थान बना सकता है। इस विश्व रंगमंच दिवस पर हमें इस अमूल्य कला को सहेजने और आगे ले जाने का संकल्प लेना चाहिए।

राजेश कुमार सिन्हा
खार(वेस्ट), मुंबई 52

आओ नारी शक्ति को भारत की सफ़लता की गाथा बनाएं

भारतीय कौशल नारी सब पर भारी

वैश्विक स्तरपर भारतीय नारी की गाथा बहुत ही सम्मानजनक रूप से गाई जाती है, क्योंकि आदि अनादि काल से ही भारतीय नारी शक्ति की अनेक मान्यता प्राप्त कहानियों कथाओं से भी हमें पता चलता है कि नारी शक्ति की शक्ति तो देवी-देवताओं को भी करनी पड़ी थी, हम तो इस कलयुग में इंसान मात्र हैं। इसलिए हमें चाहिए कि नारी शक्ति का सम्मान कर उनको कार्यबल प्रदान करें जिसको भारत के विकास में प्रमुख इंजन के रूप में चिन्हित कर एक फ़रवरी 2025 को आने वाले बजट में ऐसी योजनाओं स्कीमों को लाया जाना चाहिए ताकि नारी शक्ति को कार्य बल में उचित भागीदारी मिले और भारत के तेजी से विकसित हो रहे पथ को अधिक तेजी से आगे बढ़ाया जा सके।

साथियों बात अगर हम नारी शक्ति को कार्यबल के रूप में चिन्हित करने की करें तो, हमने कई क्षेत्रों में देखे हैं कि नारी कार्यबल अपेक्षाकृत रूप से अधिक सशक्त व प्रभावी रिजल्ट देता है। हम अगर नर नारी के कार्यबल की गुणवत्ता का विश्लेषण करें तो, मेरा मानना है कि नारी बल गुणवत्ता में अधिक कुशल दिखेगा। जिसका मैंने खुद ने ग्राउंड रिपोर्टिंग कर सत्यता परखी है। मैंने अनेक शोरूम ऑफिसेस दवाखाना वकील सीए अनेक प्रोफेशनल जगह कंपनियों में वहां के प्रमुख संचालकों, मैनेजरों अधिकृत व्यवस्थापकों से बात की तो उन्होंने भी नारी कार्यबल को अपेक्षाकृत अधिक सशक्त इमानदार रेगुलर जिम्मेदार जवाबदेही में अवल बताया और नारी कार्यबल को प्राथमिकता देने की बात स्वीकार की, क्योंकि नकारात्मक आदतें नारी कार्यबल में नहीं देखने को मिलती जितनी नर कार्यबल में देखने को मिलती है। उसी तरह नेतृत्व शक्ति में भी नारी कार्यबल अधिक उच्च गुणवत्ता में अग्रणी ही है इसका उदाहरण हमें वैश्विक स्तरपर मूल भारतीय महिलाओं कल्पना चावला कमला हैरिस सहित अनेकों का नाम लिया जा सकता है।साथियों बात अगर हम 1 फ़रवरी 2026 को आने वाले बजट में नारी शक्ति कार्यबल के एंगल से देखें तो आज इसकी कार्य शक्ति बढ़ाने के लिए अधिक बजट एलोकेशन की आवश्यकता है। कुछ ऐसी योजनाएं, इंसेंटिव, छूट दी जानी चाहिए ताकि नारी कार्यबल को प्राथमिकता दिए जाने पर प्रोत्साहन मिले। वैसे भी हम अभी अनेकों निजी कंपनियों में देखते हैं कि वहां नारी कार्यबल को प्राथमिकता दी जाती है जो वर्तमान समय की जरूरत भी है अब वक्त आ गया है कि नारी शक्ति के कार्य बल को बढ़ाने आरक्षण का बंधन भी तोड़ने की जरूरत है और उच्च कौशल्या के आधार पर नारी कार्यबल की सेवा राजनीतिक, औद्योगिक शैक्षणिक सहित हर क्षेत्र में ली जानी चाहिए। भारतीय कौशल नारी सबपर भारी की थीम को आगे बढ़ाया जाएसाथियों बात अगर हम माननीय पीएम नीति आयोग में प्रसिद्ध अर्थशास्त्रीयों व विशेषज्ञों से बातचीत की करें तो उन्होंने भी,नारी शक्ति को भारत के विकास के प्रमुख इंजन के रूप में चिन्हित किया और कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को और सक्षम बनाने के साथ-साथ उसे बढ़ावा देने के लिए प्रयास जारी रखने का आग्रह किया, उन्होंने आज नीति आयोग में प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों और विशेषज्ञों के साथ बातचीत की।विचार-विमर्श वैश्विक प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच भारत का विकास और दृढ़ता विषय पर आधारित था। अपनी टिप्पणी में कहा कि, जहां जोखिम थे, वहीं उभरता हुआ वैश्विक वातावरण डिजिटलीकरण, ऊर्जा, स्वास्थ्य देखभाल और कृषि जैसे क्षेत्रों में नए और विविध अवसर प्रदान करता है। इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए, सार्वजनिक और निजी क्षेत्र को तालमेल का लाभ उठाने और लीक से हटकर सोचने की जरूरत है। उन्होंने भारत डिजिटल की सफलता की गाथा और देश भर में फिनटेक को तेजी से अपनाने, और समावेशी विकास और इसके दृढ़ संकल्प की क्षमता की सराहना की। बैठक में प्रतिभागियों ने उन तरीकों पर व्यावहारिक उपायों की पेशकश की, जिनसे भारत अपने विकास की गति को विवेकपूर्ण ढंग से बनाए रख सकता है। कृषि से लेकर विनिर्माण तक विविध विषयों पर प्रधानमंत्री के साथ विचार और सुझाव साझा किए गए। यह स्वीकार करते हुए कि अंतर्निहित वैश्विक प्रतिकूलताएं जारी रहने की संभावना है, भारत की दृढ़ता को और मजबूत करने के लिए रणनीतिक सिफारिशें भी साझा की गईं। इस बात पर सहमति कायम हुई कि अपने लचीलेपन के कारण, भारत अशांत वैश्विक मंच पर एक उज्ज्वल स्थान बनाकर उभरा है। यह सुझाव दिया गया था कि सभी क्षेत्रों में समग्र विकास के माध्यम से इस नींव पर नए सिरे से विकास पर जोर देने की आवश्यकता होगी। हर नारी अपनी प्रतिभा के साथ न्याय कर पाये , अपने अरमानो को पंख लगाने का जज्बा रखे और उन्हें पूरा करने का हौंसला रखे । किसी से कोई खैरात नहीं, कोई पक्षपात नहीं , अपने बलबूते पर मंजिल हांसिल करने माद्दा रखे।साथियों बात अगर हम बड़ी संख्या में अभी भी महिलाओं की वर्तमान स्थिति की करें तो, वर्तमान युग में महिलाओं को मात्र भोग विलास की वस्तु बना कर रख दिया गया है। जिसका मूल काम घर में रहकर चूल्हा चौका करना तथा परिवार की देखभाल करना रह गया है। आज के समय जहां विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है वहीं दूसरी तरफ महिलाओं का कुछ ऐसा वर्ग भी है जिनें उनके मूल अधिकारों से वंचित रखा जा रहा है। इस कुप्रथा को दूर करने के लिए हर किसी को अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। जब तक हम अपनी मानसिकता को नहीं बदलकर स्त्रियों को साथ नहीं लेंगे तब तक राष्ट्र का सर्वांगीण विकास मुमकिन नहीं हो पाएगा।भारत को सोने की चिड़िया कहा जाता था क्योंकि उसके विकास में पुरुष तथा स्त्रियों का समान प्रयास हुआ करता था। लेकिन जैसे-जैसे स्त्रियों के विकास का अनुपात कम होता गया वैसे वैसे भारत का गौरव भी धूमिल पड़ता गया।भारतीय महिलाओं का इतिहास में योगदान अप्रतिम रहा है। सिर्फ स्वाधीनता संग्राम के समय को देखा जाए तो भारतीय महिलाओं का योगदान अगणनीय ही प्राप्त होगा। स्वाधीनता संग्राम के दौरान महारानी लक्ष्मीबाई, विजयालक्ष्मी पंडित, अरुणा आसफ अली, सरोजिनी नायडू, कमला नेहरु, सुचेता कृपलानी, मणीबेन पटेल अमृत कौर जैसी स्त्रियों ने आगे आकर अपना अप्रतिम योगदान दिया।अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारतीय कौशल नारी सबपर भारी। आओ नारीशक्ति को भारत की सफ़लता की गाथा बताएं।

नारी शक्ति को भारत के विकास के प्रमुख इंजन के रूप में चिन्हित करने की योजनाएं बनाना ज़रूरी।

सोसाइटी प्रबंधक और किसानों में उपज तौलने को लेकर हुआ विवाद,

किसानों ने किया चक्का जाम

महिदपुर। नारायण रोड पर महिदपुर ब्रांच की बरखेड़ा बुजुर्ग सोसाइटी पर किसान अपनी उपज लेकर आता है।किसानों ने बताया कि यहां पर हमें दो से चार दिन खड़े रहना पड़ता है। उसके बाद ही हमारी उपज तोली जाती है।जब हम अपनी उपज लेकर आते हैं तो ट्रैक्टर और ट्राली का भाड़ा 5 से 6 दिन का लग जाता है। किसानों ने बताया कि आज यहां पर बिना नंबर की ट्राली की उपज को तोला जा रहा था जिससे विवाद की स्थिति उत्पन्न हुई।किसानों ने सड़क पर अपने ट्रैक्टर खड़े कर चक्का जाम कर दिया जिसे प्रशासन की समझाइश के बाद खुलवाया गया।किसानों की समस्या की जानकारी जैसे ही समाजसेवी विजयसिंह गौतम को मिली तो वह तुरंत किसानों से मिलने बरखेड़ा बुजुर्ग सोसाइटी पर पहुंचे और किसानों से समस्या सुनी।किसानों ने समाजसेवी को अपनी समस्या बताई।समाज सेवी विजयसिंह गौतम ने सोसाइटी प्रबंधक गुमानसिंह से चर्चा की तो पता लगा कि दो दिन पूर्व किसान और तुलावटी हम्मालों के बीच विवाद हो गया था जिस कारण हम्माल नहीं आ रहे थे।हम्मालों से बात हो गई है।कल से वह आ जाएंगे और 6 तोल कांटे सुचारू रूप से शुरू कर दिए जाएंगे।इसके बाद किसी भी किसान को अब समस्या नहीं होगी।समाजसेवी विजय सिंह गौतम ने इस पूरे मामले में एसडीएम अजय हिंगे से फोन पर चर्चा की जिस पर एसडीएम अजय हिंगे ने सोसाइटी प्रबंधक को समझाइश देते हुए समस्या का त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिए।

वो दिन याद करो !

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष पुराना नाका वाला नारायण रोड चौराहे से लगी गली में यह दो अवशेष ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी थे।यह दोनों कुछ दूरी पर लगभग आमने-सामने विद्यमान थे।उनको एक ही चित्र में लेने की कोशिश और अलग से पृथक-पृथक दृश्य भी हैं।यह दृश्य यह बताने के लिए काफी है कि इस फानी दुनिया में कुछ भी चीज स्थायी नहीं है।जब तक काम में आए तब तक काम में ली जाती है वरना उसकी इसी तरह से दुर्दशा हो जाती है।फिर उसकी तरफ कोई मुड़कर भी देखना पसंद नहीं करता।खैर है कि इस कैमरे ने इस दृश्य को पक

नि;शुल्क कोचिंग बिल्हा का पांच बच्चें विद्यालय में चयनित

संकुल कन्या बिल्हा के शैक्षिक समन्वयक केशव वर्मा के मार्गदर्शन व संरक्षण में जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा के शिक्षक कलेश्वर साहू व राजेश यादव शासकीय प्राथमिक शाला कोटिया द्वारा बिल्हा क्षेत्र के बच्चों के आर्थिक स्थिति व शिक्षा स्तर को ध्यान में रखते हुए नवोदय विद्यालय परीक्षा की तैयारी कराई जाती है। प्रवेश परीक्षा 2025 हेतु निःशुल्क कोचिंग कराया गया जिसमें से समीक्षा ध्रुव, शेखर राज कोशले, अवनीश श्रीवास, अविनाश वर्मा, दिशा साहू का चयन नवोदय विद्यालय कक्षा छठवीं हेतु हुआ है। इन 5 बच्चों का चयन होने से उनके माता - पिता व पूरे बिल्हा में उत्साह देखा जा रहा है। नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा 2025 पूरे देशभर में 18 जनवरी को आयोजित किया गया था। जिसमें देश के लाखों बच्चों ने परीक्षा दी । कलेश्वर साहू व राजेश द्वारा जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा में यह निःशुल्क कोचिंग का संचालन शाला समय के अतिरिक्त शाम 4 बजे से 5-30 बजे तक किया गया था। जिसमें बिल्हा क्षेत्र के बच्चों को निःशुल्क कोचिंग कराया गया। इस कोचिंग के संचालन में केशव वर्मा शैक्षणिक समन्वयक कन्या बिल्हा, साधराम मरकाम प्रधान पाठक, शिक्षक पुनीराम साहू, श्वेता केशरी, मोतीलाल सेन, मदन एक्का का सहयोग रहा है। विभिन्न स्कूलों के गरीब बच्चों को निःशुल्क कोचिंग देने वाले जिले का एकमात्र स्कूल जनपद प्राथमिक शाला बिल्हा संकुल कन्या बिल्हा है। बच्चों के लिए समर्पित इन दोनों शिक्षक का कार्य बहुत ही सराहनीय व अनुकरणीय है। केशव वर्मा ने बताया कि हमारी टीम का उद्देश्य प्रत्येक बच्चों तक शिक्षा विभाग के सभी योजनाओं का लाभ पहुंचाना है। हमारी टीम हृश्वक्र2020 को लेकर विभिन्न कार्य कर रही है यह टीम पूरे जिला के प्रेरणादायक बन गई है। । कलेश्वर साहू ने चयनित बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि जिसका चयन नहीं हुआ है उनको मायूस नहीं होना हैं हमारे कोचिंग के माध्यम जो कुछ सीखा है वह आपके भविष्य में सहायक होगी. आगे आप लोगों के लिए और भी विभिन्न अवसर है जिसमें हमारा पूर्ण सहयोग रहेगा। राजेश यादव ने कहा सफलता एक दिन का परिणाम नहीं है इसके लिए निरंतरता जरूरी है